॥ प्रेरणा स्रोत! ॥

विश्वदर्शन - गीता!

- गीता शाश्वत शान्ति, अनन्त जीवन एवं कभी न विनाशहोनावालाधामदेतीहै।
- भारत का सम्पूर्ण अध्यात्म और आत्मस्थिति दिलानेवालासाधन-क्रमइस गीतामेंस्पष्टवर्णित है।
- यहधर्मशास्त्र है।विश्वगुरु भारत कीसम्पूर्णखोज, समस्तसिद्धान्तइसमेंदेखेजासकतेहैं।
- यहकिसीकबीलेकाशास्त्र नहीं,अपितुसंसारभर केमानवमात्रकादर्शनहै।
- इसमें निर्दिष्ट नियत कर्म का पालन कर मनुष्य परमश्रेयकोप्राप्तकरताहै।
- वस्तुचाहने वाला व्यक्तिवस्तुप्राप्तकर, वस्तु की आयुहैइसलिएनिश्चितअवधितकउसकाउपभोग करअविनाशीपदको प्राप्तकरताहै।
- इसमेंबीजकानाशनहींहै,अतःअल्पसाधन का अभ्यासभीमहान्‌जन्म-मृत्युकेबन्धनसेछुटकारा दिलाताहै।सदारहनेवालाअमृत,मृत्युसेअतीत परमपदकाभागीबनादेताहै।
- शान्ति चाहनेवाले मानव मात्र का धर्मशास्त्र यही श्रीमद्‌भगवद्‌गीता है। जिसमेंईश्वरएक,पानेकी क्रिया एक, पथ में अनुकम्पा एक तथा परिणामएक है,वहहैप्रभु-दर्शनऔरप्रभु-भावकी प्राप्ति।अमृतमयअक्षयपद,सदारहनेवालेअनन्त जीवनकीप्राप्ति।देखें,'यथार्थगीता'!
- गीता केवल हिन्दुओं का धर्मशास्त्र नहीं है। यह मानव-दर्शन है, मानव-धर्म है। कारण कि गीता में 'हिन्दू'शब्दकाप्रयोगनहींहै।
- प्राचीनशास्त्रोंऔरसंस्कृतशब्दकोशमें भी'हिन्दू' शब्द नहीं है। यह राजस्थान में बोली जाने वाली भाषाकाशब्दहै।यहशब्दहजार-पन्द्रहसौवर्षोंसे प्रचलन में आया है। चार भागों में बँटा हिन्दू चार देवियोंका पुजारीहै-ब्राह्मण सरस्वती का, क्षत्रिय दुर्गा का, वैश्य लक्ष्मी का एवं शूद्र वनदेवी, भूत-भवानी का। इन देवियों का इस शास्त्र में नाम नहीं है।
- यहसम्पूर्णआर्य-विधिहै,आध्यात्मिकदेशभारतके आध्यात्मिकऊर्जाकीकुंजीहै।
- इतिहास साक्षी है कि जिन कबीलों के पास उनके एकतामूलक धर्मग्रन्थथेवेगुलामीकेपश्चात्‌भी जीवितरहे, अवसर पातेही स्वतंत्र हो गये पुनः पल्लवित होगये, किन्तु जिनकेपास एकधर्मग्रन्थनथा।वेसंगठनतिरोहितहो गये।अतः

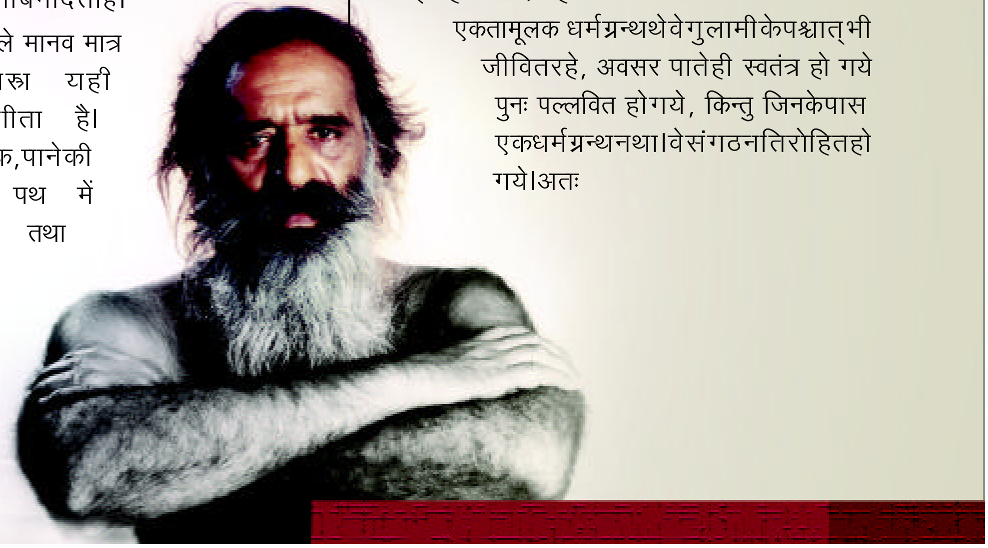

विश्वदर्शन - गीता!

भारतीयों को अपना एक धर्मशास्त्र विनिश्चित कर लेनाचाहिए।

- गीताकेअनुसारएकआत्माही शाश्वतहै,परम सत्य है,सनातनहै।वेहीकण-कणमेंव्याप्तहैं। वह सर्वत्र से देखते और सुनते हैं। हम-आप संकल्प बाद मेंकरतेहैं,वहपहलेहीजानतेहैं। उन एक परमात्मा की शरण जाना, उन्हें अपने श्रद्धापूरित हृदय में धारण करना धर्म है। जो उनके प्रति आस्थावान् है आस्तिक है, अस्तित्व काउपासकहै-इसलिएआर्यहै।
- उन परमात्मा के प्रति समर्पण के साथ उठना-बैठना,प्रत्येककार्यसमर्पणकेसाथआरम्भऔर सम्पन्नकरनाआर्यव्रतहै,आर्यसंस्कृतिहै।
- उन परमात्मा को देखना, स्पर्श करना, उनमें प्रवेश करना, उनमें स्थिति प्राप्त करना और उनकी समग्र विभूतियों से अवगत होना आर्यविधिहै।यहीआर्य-विधिमानवसंहितागीता है।
- ॐ का जप आर्य-विधि की जागृति है। मात्र जीवन-शैली को ही धर्म की संज्ञा देना भयंकर भूलहै।इसकासुधारअपेक्षितहै।
- इसकाप्राचीननामआर्यथा।कालान्तरमेंइसका नाम सनातन पड़ा क्योंकि आत्मा शाश्वत है; इसीलिएउसकीप्राप्तिकीविधिहोनेसेसनातन नामपड़ा।करोड़ोंवर्षोंकेअन्तरालसेवर्तमानमें इसका नाम है, हिन्दू– हृदि+इन्दु=हिन्दू। या निशा सर्वभूतानां.....।।इस जगत् रूपीरात्रिमें उसपरमात्माकाक्षीणप्रकाशसदाविद्यमानहै। इसलिएएकनामकालक्रमकेअन्तरालसेहिन्दू पड़ा,तीनोंकाअर्थएकहीहोताहै।अर्थात्परम पवित्रहै।इसकातात्पर्यहैकिजगत्केअन्धकार में होते हुए भी हृदय-देश में वह परमात्मा सदा विद्यमानहै। श्लोक नं.१३/१७।।'यथार्थगीता' द्रष्टव्यहै।
- यह गीता विश्व के समस्त धर्माचार्यों की धर्म-जननीहै;क्योंकिएकईश्वरकीशोधगीतासेहै।
- इसमें आपयहपायेंगेकिऋषि लोग भजन कैसे करतेथे।
- गीता सम्प्रदाय और मज़हब के व्यूह में नहीं फँसाती।यहसंसार-समुद्रसेतरनेकीनौकाहै।
- यह मानव-दर्शन है, जो मानव के अन्तर्मन में प्रसुप्त दुःखकेकारणोंकोमिटाकरअसीम सुख कास्थानदेतीहै।
- गीताकोसर्वांगीणआध्यात्मिक ढाँचे मेंदेखनाहै तोदेखें 'यथार्थ गीता'।तीनआवृत्तिकरें।
- जिसतरहभारतकाराष्ट्रीयपक्षीमयूर,राष्ट्रीय पशु शेर, राष्ट्रध्वज तिरंगा, राष्ट्रीय प्रतीक अशोक चिन्ह, राष्ट्रभाषा हिन्दी है, इसी तरह भारतकाएकराष्ट्रीयधर्मशास्त्रभीहोनाचाहिए।
- गीताकिसीराजनीतिकदल-विशेषकाग्रन्थनहीं है।यहसभीजाति,देशऔरकाल कीसर्वमान्य धर्मसंहिताहै।
- महापुरुषअपने उपदेशों और कृतियोंके माध्यम से पहचाना जाता है। मूकचित्र भला क्या उपदेशदेंगे।महानिर्वाणसेपूर्वभगवान् बुद्धने शिष्यों को अपने उपदेशों के अनुरूप आचरण करने का निर्देश देते हुए कहा था- ''आनन्द! तथागत केनश्वरशरीरकीपूजामेंसमयनष्ट मत करना।'' इसी क्रम में विश्व के महानतम सम्राट अशोक ने शिलालेख, स्तम्भलेख और गुहालेखों में प्रतिमा के स्थान परभगवान्बुद्ध के उपदेशों का ही अंकन कराना श्रेयस्कर समझा। मूर्तिकला एवं चित्रकला उन दिनों अत्यन्त विकसित थी। जिसके प्रमाण स्तम्भ शीर्षस्थ सिंह प्रतिमा तथा गुहा-चित्र हैं, किन्तु प्रियदर्शी सम्राट ने अपने चित्र को महत्त्व नहीं दिया।इसी प्रकार स्वतंत्रता केपश्चात्मुद्राओं, चौराहों तथा महत्त्वपूर्ण स्थलों पर राष्ट्रपिता महात्मागाँधीकेचित्र-मात्रसेउनकेसिद्धान्तों, व्यक्तित्व या कृतित्व का बोध नहीं होपाता। अच्छा तो यह होता कि इसके स्थान पर राष्ट्रपिता के मूल प्रेरणा स्रोत,संकटकेसमय उन्हें जहाँ से समाधान मिलता था, भगवान् श्रीकृष्णकेश्रीमुख कीवाणीश्रीमद्भगवद्गीता के उपदेश अंकित कराये जायँ और गीता को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित करराष्ट्रपिता के सन्देश कोजन-जनतकपहुँचायाजाय।